अमर उजाला

बृहस्पतिवार | 16 जुलाई 2015

'सिर्फ चीनी बनाकर मिलें फायदा नहीं कमा सकतीं'

- यूपी सहकारी चीनी मिल संघ लिमिटेड के प्रबंध निदेशक ने उठाया मुद्दा
- बोले, किसानों को गन्ना भुगतान बड़ी समस्या

लखनऊ (ब्यूरो)। किसान को उसके गन्ने का भुगतान चीनी मिलें नहीं कर पा रहीं। इसकी वजह खुद चीनी मिलों का घाटे से नहीं उबर पाना है। मिल संचालकों को भी समझना होगा कि केवल गन्ने से चीनी बनाकर फायदा नहीं कमाया जा सकता। आईआईएसआर के रायबरेली रोड स्थित परिसर में बुधवार को यूपी सहकारी चीनी मिल संघ लिमिटेड के प्रबंध निदेशक डॉ. बीके यादव ने यह मुद्दा उठाया। वह संस्थान में राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि भविष्य में पेट्रोल में 15-20 प्रतिशत तक की इथेनॉल का मिश्रण किया जाए। साथ ही बिजली, इथेनॉल, जैविक खाद भी गन्ने से पैदा करना होगा। इस दौरान उन्होंने गन्ना उत्पादन तकनीक विषय पर एक पुस्तक का विमोचन भी किया।

वहीं, आईआईएसआर के निदेशक डॉ. ओके सिन्हा ने बताया कि गन्ने की खोई से 2-जी इथेनॉल का उत्पादन चीनी मिलों के लिए वरदान साबित हो सकता है। अगर इथेनॉल की मांग बढ़ती है तो चुकंदर की खेती गन्ने के साथ सह-फसली के रूप में करके ज्यादा इथेनॉल बनाया जा सकता है। कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक और प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रभारी डॉ. एके साह मौजूद रहे।

सिर्फ चीनी बनाकर अब मिलें मुनाफा नहीं कमा सकतीं

कल्पतरु समाचार सेवा

■ भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

लखनऊ। चीनी उद्योग को आर्थिक बदहाली से उबारने के लिए विविधीकरण आवश्यक है। सिर्फ गन्ने से चीनी बनाकर अब चीनी मिलें मुनाफा नहीं कमा सकती हैं। अन्य उत्पादों जैसे बिजली, एथेनॉल व जैविक खाद आदि का सह उत्पाद कर ही मिलें मुनाफा कमा सकती हैं।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में यह बात उप्र चीनी मिल संघ के प्रबंध निदेशक डॉ. बीके यादव ने कही। उन्होंने भविष्य में गन्ना किसानों को समय पर गन्ना भुगतान कैसे हो, इस पर गंभीरतापूर्वक विचार करने के लिए कहा। इसके लिए पूर्व नियोजन को महत्वपूर्ण बताया। वर्तमान में चीनी उद्योग को आर्थिक बदहाली से उबारने के लिए उपाय सुझाये। संस्थान के निदेशक डॉ. ओके सिन्हा ने कहा कि गन्ना के खोई से टू-जी इथनाल का उत्पादन चीनी मिलों के लिए वरदान साबित हो सकता है। अगर इथनाल की मांग बढ़ती है तो चुकंदर की खेती गन्ना के साथ सह-फसली के रूप में करके ज्यादा मात्रा में इथनाल बनाया जा सकता है। अगर 2-17 तक पेट्रोल में 20 फीसदी तक इथनाल मिश्रण के लक्ष्य को पाना है तो अभी से इस दिशा में तीव्र गति से कार्य करने की जरूरत है। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभारी डा. एके साह ने अपने उदबोधन में बताया कि चीनी मिल के प्रतिनिधियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को उत्कृष्ट बताते हुए भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रम आयोजित कराने का आग्रह किया।

डा. साह ने बताया कि इस कार्यक्रम में कुल 14 चीनी मिलों के 16 गन्ना अधिकारियों ने भाग लिया तथा आज सभी को प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। प्रशिक्षित गन्ना अधिकारी चीनी मिल क्षेत्र में भारतीय गन्ना अनुसंधान का राजदूत बनकर वैज्ञानिक तकनीकों के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

राष्ट्रीय
सहारा
लखनऊ। बृहस्पतिवार • 16 जुलाई • 2015

चीनी मिलों को आर्थिक बदहाली से उबारने पर जोर

लखनऊ (एसएनबी)। गन्ना किसानों के लिए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित किया गया। 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम बुधवार को सम्पन्न हो गया। कार्यक्रम के समापन समारोह के मुख्य अतिथि उप्र सहकारी चीनी मिल संघ लिमिटेड के संघ निदेशक डा. बीके यादव ने कहा कि भविष्य में गन्ना किसानों को समय पर गन्ना गतान कैसे हो इस पर गंभीर विचार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान में चीनी द्योग को आर्थिक बदहाली से उबारने के लिए विविधीकरण की आवश्यकता है। उन्होंने विष्य में देश के अंदर पेट्रोल में 15 से 20 प्रतिशत तक की इथनॉल मिश्रित किये जाने पर ोर दिया। गन्ना से सिर्फ चीनी बनाकर अब चीनी मिलें मुनाफा नहीं कमा सकतीं अन्य त्पादों जैसे बिजली, इथनॉल, जैविक खाद इत्यादि के सह उत्पाद कर ही मिलें मुनाफा कमा सकती है। इस अवसर पर डा.ओ.के. सिन्हा द्वारा संकलित एवं सम्पादित गन्ना त्पादन तकनीक विषय पर पुस्तक का विमोचन भी मुख्य अतिथि द्वारा किया गया।

इससे पहले संस्थान के निदेशक डा.ओ.के. सिन्हा ने कहा कि गन्ना के खोई से 2-जी थनॉल का उत्पादन चीनी मिलों के लिए वरदान साबित हो सकता है। अगर इथनॉल की ाँग बढ़ती है तो चुकन्दर की खेती गन्ना के साथ सह-फसली के रूप में करके ज्यादा मात्रा इथनॉल बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि 2017 तक पेट्रोल में 20 प्रतिशत इथनॉल मिश्रण के लक्ष्य को पाने के लिए अभी से इस दिशा में तेजी से काम करना होगा।

गन्ने के भुगतान के लिए नियोजन की जरूरत

- *भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में प्रशिक्षण कार्यक्रम*

स्वतंत्र आवाज़ डॉट कॉम

Thursday 16 July 2015 01:57:08 AM

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। समापन समारोह में उत्तर प्रदेश सहकारी चीनी मिल संघ लिमिटेड के प्रबंध निदेशक डॉ बीके यादव मुख्य अतिथि के रूप में आए और उन्होंने भविष्य में गन्ना किसानों को समय पर गन्ना भुगतान कैसे हो इस पर गंभीर विचार करने पर जोर दिया तथा इसके लिए पूर्व नियोजन बनाने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने वर्तमान में चीनी उद्योग को आर्थिक बदहाली से उबारने के लिए विविधिकरण को आवश्यक बताया तथा भविष्य में देश के अंदर पेट्रोल में 15-20 प्रतिशत तक की इथनॉल मिश्रित करने पर जोर दिया।

प्रबंध निदेशक ने कहा कि गन्ने से सिर्फ चीनी बनाकर अब चीनी मिलें मुनाफा नहीं कमा सकतीं, अन्य उत्पादों जैसे बिजली, इथनॉल, जैविक खाद इत्यादि के सह उत्पाद कर ही मिलें मुनाफा कमा सकती हैं। इस अवसर पर डॉ बीके यादव ने डॉ एके साह और डॉ ओके सिन्हा की संकलित एवं संपादित गन्ना उत्पादन तकनीक विषय पर पुस्तक का विमोचन किया। संस्थान के निदेशक डॉ ओके सिन्हा ने कहा कि गन्ना के खोई से 2-जी इथनॉल का उत्पादन चीनी मिलों के लिए वरदान साबित हो सकता है, अगर इथनॉल की मांग बढ़ती है तो चुकंदर की खेती गन्ने के साथ सह-फसली के रूप में करके ज्यादा मात्रा में इथनॉल बनाया जा सकता है।

डॉ ओके सिन्हा ने कहा कि अगर 2017 तक पेट्रोल में 20 प्रतिशत तक इथनॉल मिश्रण के लक्ष्य को पाना है तो अभी से इस दिशा में तीव्र गति से कार्य करने की जरूरत है। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभारी डॉ एके साह ने बताया कि चीनी मिल के प्रतिनिधियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को उत्कृष्ट बताते हुए भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रम आयोजित कराने का आग्रह किया है। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम में कुल 14 चीनी मिलों के 16 गन्ना अधिकारियों ने भाग लिया और सभी को प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षित गन्ना अधिकारी चीनी मिल क्षेत्र में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान का राजदूत बनकर वैज्ञानिक तकनीकों के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

आलू सन्देश

देश हो या परदेश पढ़ें आलू सन्देश

कानपुर, गुरुवार 16 जुलाई 2015

PH:.09415403674
09415405464,09415132046
Fax:0512-3013519

कार्यालय : 86/231-ए, देवनगर (रायपुरवा) कानपुर-208003

वार्षिक शुल्

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय प्रशिक्षण का समापन

गन्ना किसानों को समय पर भुगतान के लिए नियोजन की आवश्यकता

लखनऊ । भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में १५ दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन समारोह १५ जुलाई को आयोजित किया गया। समापन समारोह में उ० प्र० सहकारी चीनी मिल संघ लि० के प्रबंध निदेशक डा० बी० के० यादव, मुख्य अतिथि थे। अपने उद्बोधन भाषण में डा० बी०के० यादव ने भविष्य में गन्ना किसानों को समय पर गन्ना भुगतान कैसे हो इस पर गंभीर विचार करने पर जोर दिया तथा इसके लिए पूर्व नियोजन बनाने पर महत्व डाला। वर्तमान में चीनी उद्योग को आर्थिक बदहाली से उबारने के लिए विविधिकरण को आवश्यक बताया तथा भविष्य में देश के अंदर पेट्रोल में १५-२० प्रतिशत तक की इथनॉल मिश्रित करने पर जोर दिया। गन्ना से सिर्फ चीनी बनाकर अब चीनी मिलें मुनाफा नहीं कमा सकता, अन्य उत्पादों जैसे बिजली, इथनॉल, जैविक खाद इत्यादि के सह उत्पाद कर ही मिलें मुनाफा कमा सकता है। इस अवसर पर डा० ए० के० साह तथा डा० ओ० के० सिन्हा द्वारा संकलित एवं सम्पादित गन्ना उत्पादन तकनीक विषय पर पुस्तक का विमोचन माननीय मुख्य अतिथि द्वारा किया गया।

संस्थान के निदेशक डा० ओ० के० सिन्हा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि गन्ना के खोई से २-जी इथनॉल का उत्पादन चीनी मिलों के लिए वरदान साबित हो सकता है। अगर इथनॉल की माँग बढ़ती है तो चुकन्दर की खेती गन्ना के साथ सह-फसली के रूप में करके ज्यादा मात्रा में इथनॉल बनाया जा सकता है। अगर २०१७ तक पेट्रोल में २० प्रतिशत तक इथनॉल मिश्रण के लक्ष्य को पाना है तो अभी से इस दिशा में तीव्र गति से कार्य करने की जरूरत है। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभारी डा० ए० के० साह ने अपने उद्बोधन में बताया कि चीनी मिल के प्रतिनिधियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को उत्कष्ट बताते हुए भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रम आयोजित कराने का आग्रह किया।

डा० साह ने बताया कि इस कार्यक्रम में कुल १४ चीनी मिलों के १६ गन्ना अधिकारियों ने भाग लिया तथा आज सभी को प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। प्रशिक्षित गन्ना अधिकारी चीनी मिल क्षेत्र में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान का राजदूत बनकर वैज्ञानिक तकनीकों के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देगें।